एक था जादूगर!

वरुण ग्रोवर

जादू सचमुच होता है या सिर्फ आँखों का धोखा है? यह सवाल मैं बचपन से आज तक खुद से बहुत बार कर चुका हूँ। पर अभी भी कोई मत नहीं बना पाया हूँ। इसकी एक वजह है – मेरे बचपन में घटी एक घटना जिसे आज तक लोग मानने से इनकार करते रहे हैं। दोस्तों को सुनाऊँ तो या तो वे हँसने लगते हैं या सोचते हैं कि मैं उनका मज़ाक बना रहा हूँ। और घर के बड़ों को तो बचपन में ही सुना के मार खा चुका हूँ। तुमको भी सुनाता हूँ। बस इतना बता दूँ कि यह कोई कहानी नहीं, सिर्फ एक घटना है। इसलिए इसका कोई 'रोमांचक अन्त' मेरे पास नहीं है। मेरे साथ सन् 1992 में लखनऊ की सर्दियों में जो हुआ, वो बता देता हूँ...

दुर्गा पूजा की छुट्टियाँ चल रही थीं। हम सब दोस्त हर शाम पूजा पार्क (जहाँ दुर्गा पूजा का पंडाल लगा था) में मिलते थे। और वहाँ होने वाले कार्यक्रम (कभी ऑरकेस्ट्रा, कभी बांग्ला नाटक) देखकर 8 बजे के आस-पास घर लौटते थे। हम सातवीं में आ गए थे इसलिए घर से अकेले निकलने की छूट भी मिल चुकी थी। हम इसका पूरा फायदा उठाते थे। कभी 9 बजे से पहले घर नहीं पहुँचते थे और करीबन रोज़ ही अपनी-अपनी अठन्नियाँ जमाकर पानी-बताशे खाते थे। पूजा का छठा और सातवाँ दिन हमारे लिए काफी खास होने वाला था क्योंकि छठे दिन, यानी 6 अक्टूबर को फिल्म-स्टार हेमा मालिनी अपने डांस ग्रुप के साथ आने वाली थी और सातवें दिन कलकत्ता का मशहूर जादूगर धीमान्त बरुआ आने वाला था। कहने वाले कहते थे कि धीमान्त बरुआ पी. सी. सरकार से भी बड़ा जादूगर है। उसका सबसे बड़ा जादू यह है कि वो समय में पीछे जा सकता है। दुर्गा पूजा कमेटी का चन्दा लेने हमारे घर आए सिल अंकल ने पापा को बताया था कि एक बार बरुआ सच में समय में पीछे जाकर गांधी जी का हस्ताक्षर लेकर आया था। और एक बार राज कपूर के साथ फोटो खिंचवा के भी लाया था! सबके सामने, भरे शो में! सिल अंकल ने यह भी बताया कि सरकार ने बाद में उस फोटो की बहुत जाँच करवाई और पाया कि वह फोटो एकदम असली था। राज कपूर की वैसी फोटो और किसी के पास नहीं थी। पापा थोड़ा हँसे और सिल अंकल के जाने के बाद उनका खूब मज़ाक उड़ाया था। मैं उसी दिन से बरुआ का जादू देखने को उत्सुक था। मुझे लगता था कि अगर बरुआ समय में पीछे जाते हुए मुझे भी साथ ले जाए तो?

अगले दिन जादू का शो होने वाला था। पता नहीं क्यों मैं चाह रहा था कि कल कुछ ऐसा हो जाए कि शाम को मम्मी-पापा ना आ पाएँ। सिर्फ मैं और मेरा छोटा भाई ही बरुआ का शो देखने जाएँ! हम दोनों देर रात तक बात करते रहे कि समय में पीछे जाना कितना मज़ेदार होगा!

उन दिनों दूरदर्शन पर एक सीरियल आता था – इन्द्रधनुष। जिसमें दो बच्चे 1942 में पहुँच जाते हैं। और एक रुपए में 5 किलो जलेबी खरीदकर लाते हैं। हम दोनों ने भी सोच लिया था कि अगर बरुआ हमें इतिहास में भेजता है तो हम क्या-क्या करेंगे। मेरा भाई राइट ब्रदर्ज़ के बनाए हुए पहले हवाई जहाज़ में बैठना चाहता था और मैं भारत को क्रिकेट वर्ल्ड कप जीतते हुए देखना चाहता था। मैं यह भी देखना चाहता था कि मेरी माँ बच्ची थी तो कैसी लगती थी।

बड़ी मुश्किल से अगली शाम आई। सिल अंकल से मिन्नत कर के हमने सबसे आगे वाली लाइन की कुर्सी पा ली। पर्दा उठा और एक भारी-भरकम आदमी, रंगीन चोगा और काली हैट पहने आया। उसकी चार्ली चैपलिन जैसी मूँछें थीं और वह बहुत तेज़ चलता था। यही धीमान्त बरुआ था। उसके आसपास उसका एक सहायक मँडरा रहा था, जिसे वह जॉनसन बुलाता था। आते ही उसने सबसे पहले सबकी घड़ी का वक्त बदल दिया। उसने कहा कि मैं कितनी देर से आपका इन्तज़ार कर रहा हूँ और आप लोग अब आए हैं – 8 बजे! सबने अपनी-अपनी घड़ियाँ देखीं। सच में 8 बज रहे थे। जबकि सच यह था कि उस वक्त हद से हद सवा-सात हो रहे होंगे। क्योंकि सब वक्त पर शुरू हुआ था। मैं और मेरा भाई यह जादू देखकर सिहर गए। हमारे अन्दर एक अजब-सा रोमांच था – कुछ ऐसा जो किसी बड़ी घटना के बीच में होने पर होता है।

इसके बाद बरुआ ने फूलों के रंग बदले, पानी के अन्दर मोमबत्ती जलाई, तोते को अण्डे में बन्द कर दिया और थोड़ी देर बाद अण्डा फोड़कर उसमें से बटेर निकाल दी। हमारे आसपास बैठे बड़े लोग लगातार बड़बड़ा रहे थे, "यह तो सम्मोहन है... हिप्नोटाइज़ किया है। कुछ जादू नहीं है... सब धोखा है... हाथ की सफाई...।" एक आंटी ने तो यह भी कहा कि कोई बड़ा जादू होगा तो यह जनता में से किसी को नहीं बुलाएगा। और अगर बुलाया भी तो वह भीड़ में पहले से बैठा उसी का कोई आदमी होगा। मैं और मेरा भाई, जो अब तक बरुआ के फैन हो चुके थे, इन दलीलों को मन ही मन नकार रहे थे। पर हर अगले जादू के साथ, बड़ों की बातों में सच्चाई और साफ दिखने लगती थी। आरी से लड़की काटने वाले जादू में उसने अपने ग्रुप की ही एक लड़की को लिटाया। अलमारी से गायब करके पार्क के सामने वाली नाली से निकालने वाले जादू में उसने भीड़ में से एक ऐसे चेहरे को चुना जिसे हमने पहले कभी इस इलाके में नहीं देखा था। सिर्फ घड़ी गायब करने वाले जादू के लिए उसने दास अंकल के बेटे पापुन को स्टेज पर बुलाया। धीरे-धीरे मोह-जाल भंग हो रहा था। हर अगला जादू बस एक हाथ की सफाई था! अभ्यास या प्रैक्टिस का कमाल था। जैसे मदारी का बन्दर करता है!

पर तभी बरुआ की तेज़ चाल अचानक धीमी हो गई। उसने जॉनसन को सारे सामान सहित स्टेज से हटा दिया और एक छोटी-सी धुआँ फेंकने वाली मशीन चालू कर दी। देखने वालों में हो रही हलचल अचानक ही इस बदले माहौल से शान्त हो गई। सब एकटक बरुआ की आँखों में देखने लगे। मैंने अपने भाई की तरफ देखा। वो भी मुझे देखकर मुस्कुराया। हम समझ गए कि अब शायद वही जादू होने वाला है जिसके लिए हम यहाँ आए हैं। बरुआ ने अपने हाथ हवा में उठाए और सबको शान्त रहने का इशारा किया। कुछ पल खुद भी शान्त रहकर उसने बड़ी तीखी आवाज़ में कहा, "धीमान्त बोरुआ का हिस्ट्री मैजिक – इतिहास जादू!"

माइक हाथ में लेकर वह स्टेज से नीचे उतर आया और हमारे इंग्लिश वाले मिश्रा सर की तरह दर्शकों के बीच घूमते-घूमते बात करने लगा। "हिस्ट्री क्या है?" उसने पूछा। फिर बिना जवाब का इन्तज़ार किए कहा, "हिस्ट्री मतलब समय... टाइम जो बीत गया। जब हम लोग रोड पे चलता है, घर में घूमता है, किधर भी जाता है – तो हम लोग सिर्फ 'स्पेस' में नहीं चलता – 'टाइम' में भी चलता है। इस पार्क से सामने रोड तक हम चल के जाता है तो हम 100 मीटर स्पेस कवर करता है और 1 मिनट टाइम कवर करता है।" मैं बहुत ध्यान से सुन रहा था। उसने आगे कहा, "टाइम भी एक सड़क है... जैसे सुबह नौ बजे से रात नौ बजे तक का बात करें तो यह सड़क 12 घण्टा लम्बा हुआ। इसलिए अगर हमने सड़क का एक कोना पकड़ लिया, तो हम दूसरा कोना तक जा सकता है। और आज, सबके सामने, हम जाएगा!" इस पर तालियों की ज़ोरदार गड़गड़ाहट हुई, जो मैंने ही शुरू की थी।

इसके बाद बरुआ फिर से स्टेज पर चढ़ गया और एक बड़ी-सी काली चादर मंच पर बिछा दी। चादर बिछते ही उसने अपनी आँखें भीड़ पर गड़ा दीं और कहा, "हम अकेला नहीं जाएगा। तुम में से एक आदमी को लेकर जाएगा।" यह सुनते ही मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। जितना समय दिमाग से शरीर के अंगों तक सिग्नल पहुँचने में लगता है, मेरे अन्दाज़ से, उससे

भी कम समय में मेरा हाथ हवा में उठ गया। पैरों के पंजे नीचे बिछी दरी पर दबाव बनाने लगे और जवाब में एड़ियाँ कुछ इंच ऊपर उठ गईं। बरुआ की चैपलिन जैसी मूँछें थोड़ी और सिमटीं। आँखें छोटी हुईं मानो अँधेरे में ढूँढ रही हों। अन्त में वे मुझ पर टिक गईं, "तुम...लोड़का...??!", बरुआ ने बोला और मैं अपने भाई का हाथ छुड़ाकर भागा। (अब पता चला मैं क्यों चाह रहा था कि मम्मी-पापा शो देखने ना आएँ?)

स्टेज पर पहुँचने से पहले ही मेरी धड़कन इतनी तेज़ हो गई थी कि लग रहा था कि जुरासिक पार्क के डायनासॉर ज़मीन पर धम्म-धम्म पैर पटक रहे हैं। ऊपर पहुँचकर लगा कि धुआँ भी मेरे अन्दाज़ से ज़्यादा था। यहाँ तक कि मुझे सबसे आगे बैठे अपने भाई को देखने में भी दिक्कत हो रही थी। वो वहाँ से हाथ हिला-हिलाकर ही खुश था और करीब-करीब मेरे जितना ही रोमांचित भी। बरुआ ने एक बार फिर, ऊँची आवाज़ में जादू का नाम लिया और कहा, "मैं और ये लोड़का... क्या नाम है तुम्हारा?...वरुण... हम दोनों अब हिस्ट्री में जाएगा। इतिहास में। बोलो लोड़का... किधर जाएगा तुम? क्या देखेगा हिस्ट्री में?" मैंने अचानक से मन बदला और कहा, "डायनासॉर।" बरुआ ज़ोर से हँसा। दर्शक भी हँसे। फिर बोला, "डायनासॉर?" मैंने डर कर कहा, "नहीं... कुछ और भी चलेगा... क्रिकेट वर्ल्ड कप का फाइनल... जब इंडिया जीता था।"

"??...1973! कपिल देव!" बरुआ बोला। इस पर दर्शक फिर हँसे। अब मुझे दर्शकों पर गुस्सा आ रहा था क्योंकि इसमें हँसने की कोई बात नहीं थी!

पर तभी बरुआ गम्भीर हो गया। उसने अपना हाथ हवा में उठाया और सबको शान्त होने का इशारा किया। फिर मेरे पैरों के नीचे बिछी काली चादर लपेटने के लिए झुका और ऐलान किया, "ठीक है! हम कपिल देव दिखाएगा। डायनासॉर बहुत डेंजर... खतरनाक! कपिल देव कम खतरनाक!" इस पर जनता एक बार फिर हँसी। पर अब मेरा ध्यान बरुआ और उसके आदमी जॉनसन पर था। दोनों तेज़ी से कपड़ा लपेटने लगे। कुछ ऐसे जैसे माँ

अपनी साड़ी का पल्लू लपेटती हैं...छोटे-छोटे मोड़ लगाकर। फिर बरुआ मेरे बगल में खड़ा हो गया। काला कपड़ा जिसके दो सिरे किसी चील के पंख लग रहे थे, हमारे दोनों तरफ फैल गया। बरुआ ने कहा, "अब हम दोनों कपिल देव से मिलने जा रहे हैं। अगले ही पल, समय का कोना पकड़कर हम उस सड़क पर निकल जाएँगे जिस पर कपिल देव और बाकी का इतिहास है! तैय्यार?" मैंने अपने भाई को देखा और थोड़ा डरकर सिर हिलाया। अचानक एक काला पर्दा ऊपर से भी गिरा और पूरा अँधेरा हो गया। तभी ऐसा लगा जैसे पैर के नीचे से ज़मीन खिसक गई हो। मैं बिना वज़न का-सा महसूस करने लगा। कुछ ही पल में, शायद पाँच सैकंड ही में, हम एक गद्देदार धरातल पर गिर गए। इस जगह पर भी चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा था। हम कहाँ आ गए थे? मैं किस गद्दे पर गिरा था? यह इतिहास था या बरुआ की चाल? बाद में मेरे भाई ने बताया कि उस पल, जब ऊपर से काला कपड़ा गिरा, मैं और बरुआ स्टेज से गायब हो गए थे। वे दोनों काले कपड़े (नीचे बिछा और ऊपर से गिरा) वहीं के वहीं पड़े थे और मैं फिर पूरे तीन मिनट बाद स्टेज पर आया था... हाथ में कपिल देव का ऑटोग्राफ लेकर। बीच के इन तीन मिनटों में ही मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा सवाल फँसा है। उन तीन मिनटों में क्या हुआ वो बताता हूँ।

वहाँ काफी अँधेरा था जहाँ हम गिरे थे। तभी बरुआ ने ताली बजाई और एक नीली-सी रोशनी फैल गई। मैंने देखा कि हम जहाँ थे वहाँ भी काफी धुआँ था। बरुआ मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया। "अब तुम जो देखेगा...वो किसी को नहीं बताएगा!" यह बात उसने आदेश की तरह कही। मैंने सिर हिला दिया। उसने हाथ हिलाया तो धुआँ थोड़ा-सा छँटा। सामने सच में क्रिकेट के मैदान जैसा कुछ था, पर बहुत धुँधला। "ध्यान से देखो... यह लंदन का मैदान लॉर्डस है। वो देखो... मोहिन्दर अमरनाथ माइकल होल्डिंग को बॉल फेंकने जा रहा है...।" बरुआ ने इशारा किया और धुँधले में मैंने ध्यान लगाया तो उसकी बात सच लगी। लेकिन ऐसा कैसे? "यह सच है?" मैंने पूछा। बरुआ हँसा और बोला, "जो दिखता है वो सच नहीं है तो क्या सच है? तुम्हें क्या लगता है?" मैंने भी हवा में हाथ लहराया और सोचने की कोशिश की कि यह क्या हो सकता है? तब तक अमरनाथ ने आखिरी विकेट उड़ा दिया था और मेरे सामने, उस दूर दिख रहे मैदान में भारत विश्व कप जीत गया था। कपिल देव सच में दौड़ रहा था। वैसे ही जैसा मैं कई बार टीवी पर देख चुका था। लंदन के भारतीय भी मैदान में उतर आए थे और... आवाज़? आवाज़ कहाँ है? मैंने पूछा, "आवाज़ क्यों नहीं आ रही? सब इतना शान्त क्यों है?" बरुआ मेरे सवाल से खुश हुआ और कँधा थपथपाते हुए बोला, "हिस्ट्री की आवाज़ को पकड़ना मुश्किल है। आवाज़ समय में कैद नहीं रहता!" सब सपने जैसा लग रहा था। थोड़ा-सा नकली या अवास्तविक। मैं कुछ और सोच पाता, इससे पहले ही बरुआ बोल पड़ा, "चलो... वापस जाने का टाइम हो गया!" "और कपिल देव? उससे भी तो मिलना है?" मैंने तपाक से कहा। पहली बार मैंने बरुआ को थोड़ा हिचकिचाते देखा... या फिर परेशान।

वह एक पल को ठिठका, फिर हवा में पहले की तरह हाथ हिलाया और एक छोटा-सा क्रिकेट बैट कहीं धुएँ में से खींच लाया। उस पर एक ऑटोग्राफ पहले से ही था। "यही है कपिल देव का ऑटोग्राफ। बस यही मिलेगा। उससे मिलना मुश्किल है।" उसने मुझे बल्ला देते हुए कहा। "पर यह धुँआ? क्या हम सच में...?" मैंने जल्दी से पूछा क्योंकि बरुआ मेरा हाथ कसकर पकड़ चुका था और हम अगले ही पल वापस जाने वाले थे। मेरे इस सवाल पर बरुआ ज़ोर-से हँसा। यहाँ तक कि मेरा हाथ भी छोड़ दिया। फिर झुककर मेरे कान में बोला, "जादू जानने की नहीं, देखने की चीज़ है। फिर भी, बस इतना बता सकता हूँ कि जो यहाँ दिख रहा है वह सिर्फ हिस्ट्री नहीं, और सिर्फ मैजिक नहीं... दोनों है। क्या समझा लोड़का? हा हा हा..." और वह फिर हँस पड़ा।

अचानक तेज़ रोशनी मेरी आँखों पर पड़ी। मैंने देखा मैं वापस उसी स्टेज पर खड़ा था जहाँ से हम उस अजीब-सी दुनिया में गए थे। लोग तालियाँ बजा रहे थे और मेरे हाथ में कपिल देव के हस्ताक्षर वाला बल्ला था। मेरा भाई दौड़कर मेरे पास आया और गले लिपटकर बोला, "गए थे? सच में? बोलो ना... क्या देखा? बोलो ना?" मैं काफी देर तक कुछ बोल नहीं पाया। सच कहूँ तो भाई के अलावा किसी और को मैंने बहुत दिनों तक पूरी बात नहीं बताई। करीबन एक साल बाद, पापा ने एक अखबार दिखाते हुए कहा, "यह देखो... वो बरुआ... इतिहास में जाने वाला जादूगर पकड़ा गया। पुलिस ने बताया है कि वो दुर्गा पूजा के पंडाल के नीचे अपना सामान छुपा के रखता था और सीधे-सादे लोगों को लेकर उस तहखाने में गिर जाता था।"

मैं जानता हूँ आप लोग अब यही कहेंगे कि बरुआ ने मुझे भी उल्लू बनाया। किसी तहखाने में गिराया और एक नकली बल्ला पकड़ाकर खुश कर दिया। लेकिन मेरा मन कहता है, जानता है, कि मैंने जो देखा वो सिर्फ एक तहखाना नहीं था। हो सकता है मैं अभी भी गलत हूँ!

चित्रः लोकेश खोड़के, डिज़ाइनः कनक